1

12 ربیع الاول 1432ھ

Research Paper 3

16 February 2011

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

दुआ सिर्फ الله ही से

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद **अपनी मौत से पहलें पहलें** सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर **लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!**

वाहिद “नाकाबिले माफी जुर्म” कौन सा है? الله ﷻ और उसके महबूब, हमारे निहायत ही शफीक़ आका, इमामे आजम, इमामे कायनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आखिरीन, इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक तालीमाते वहीह (कुरआन और उसकी तफ्सीर यानी सहीह अहादीस) की रौशनी में दुआ सिर्फ और सिर्फ एक الله ﷻ ही से की जा सकती है। الله ﷻ के अलावा किसी भी दूसरी हस्ती से दुआ मांगना खालिसतन शिर्क है और इस गुनाह मे मुलव्विस इन्सान अगर बगैर तौबा के मर गया तो कयामत के रोज खुद الله ﷻ भी इस गुनाह को हर गिज माफ नहीं फरमाएगा। इसी शिर्क के खतरे से आगाही के लिये (नीचे लिखी) रिक्कत अंग्रेज कुरआनी आयात और सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाए:

❶ (18 अंबिया-ए-किराम عليهم السلام का जिक्रे खैर नामों के साथ कर लेने के बाद इर्शाद फरमाया).. O وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ. [سورة الانعام : آيت نمبر 88]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “और अगर (बिलफर्ज़) वह हजराते (अंबियाए किराम عليهم السلام) भी शिर्क करते तो उनके भी तमाम (नेक) आमाल बर्बाद हो जाते।”

❷ O وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ [سورة الزمر : آيت نمبر 65]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: और बेशक़ (ऐ महबूब ﷺ) हम ने आप ﷺ की तरफ भी और आप ﷺ से पहले (अंबिया-ए-किराम عليهم السلام) की तरफ भी यही वहीह फरमाई है कि अगर तुम ने शिर्क किया तो जरुर तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएंगे और तुम खसारा पाने वालों में से हो जाओगे।”

❸ O اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا [سورة النساء : آيت نمبر 116]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “बेशक الله ﷻ (इस गुनाह को तो) हरगिज़ माफ नहीं करेगा। कि कोई उसके साथ (किसी किस्म का) शिर्क करे (हाँ) इसके अलावा के गुनाह माफ करदेगा जिस के लिये चाहेगा और जो कोई भी الله ﷻ के साथ शिर्क में मुब्तला हुआ तो बेशक वह गुमराह हुवा (और) गुमराही में दूर जा पड़ा।”

❹ O اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ............ [سورة المائدة : آيت نمبر 72]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: बेशक जिस किसी ने भी الله ﷻ के साथ (किसी किस्म का) शिर्क किया तो बेशक الله ﷻ ने ऐसे शख्स पर जन्नत को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना (तो दोजख की) आग है और (वहाँ ऐसे) जालिमों का कोई भी मददगार ना होगा।”

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू बकर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “क्या मैं तुम्हें ना बताऊँ कि सब से बड़ा गुनाह कौन सा है ? और फिर आप ﷺ ने इसी सवाल को 3 मर्तबा दोहराया, तो सहाबा किराम ؓ ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ﷺ जरुर बता दीजिए ! तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: الله ﷻ के साथ किसी और को शरीक़ बनाना -----!”

[صحيح بُخارى ” كتابُ الشهادات “ حديث نمبر 2654 ، صحيح مُسلم ” كتابُ الايمان “ حديث نمبر 259]

❻ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ الله ﷻ के हर नबी عليه السلام को एक मक्बूल दुआ मिलती है और हर नबी عليه السلام ने वह दुआ मांगने में जल्दी की और इसी दुनिया में अपनी-अपनी दुआ कर ली और मैंने अपनी दुआ अपनी उम्मत के लिये संभाल कर रख ली है और कयामत के दिन मेरी वह दुआ (शिफात) हर उस शख्स को पहुँचेगी जो इस हाल में फौत हुवा कि उसने الله ﷻ के साथ किसी किस्म को शिर्क ना किया होगा।"

[صحيح بُخارى ” كتابُ الدعوات “ حديث نمبر 6304 ، صحيح مُسلم ” كتابُ الايمان “ حديث نمبر 491]

❼ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबूज़र ग़िफारी ؓ और सय्यिदना अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: الله ﷻ इर्शाद फरमाता है: “ऐ इब्ने आदम! अगर तू मेरे पास जमीन भर गुनाह करके आये, फिर तू इस हाल में मुझ से मिले कि तूने मेरे साथ किसी किस्म का शिर्क ना किया हो तो मैं उसी क़दर मग़ाफिरत व बक्शीश लेकर तुझसे मुलाकात करुँगा।”

[صحيح مُسلم ” كتابُ الذكر والدُعاء “ حديث نمبر 6833 ، جامع ترمذى ” كتابُ الدعوات “ حديث نمبر 3540]

❽ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना मआज बिन जबल ؓ और सय्यिदना अबुद्दरदा ؓ रिवायत करते हैं कि मेरे इन्तिहाई मुख्लिस दोस्त (रसूलुल्लाह ﷺ)ने मुझे वसिय्यत फरमाई: “ الله ﷻ के साथ किसी को शरीक ना करना चाहे तेरे टुक्ड़े -टुक्ड़े कर दिये जाऐं या तुझे आग में जला दिया जाए।”

[سُنن ابن ماجه ” كتابُ الفتن “ حديث نمبر 4034 ، مُسند احمد 22,128]

नोट: ऊपर लिखी आयात और अहादीस को पढ़े लेने के बाद कुल 03 अहम तरीन नताइज निकलते हैं जिनको मौत से पहले -पहले जानना किसी भी इंसान की जिंदगी में सबसे “अहम तरीन मालूमात” हैं:

Ⅰ **शिर्क** ही वह संगीन, खतरनाक, भयानक और नाकाबिले माफी जुर्म है जो इन्सान को हमेशा के लिये "जन्नत" से महरुम करवाकर हमेशा-हमेशा के लिये “दोजख” का ईंधन बना देगा।

Ⅱ **शिर्क** करने वाले को बरोजे कयामत कोई मददगार नहीं होगा यहाँ तक कि इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी उसके कुछ काम ना आ सकेंगे।

Ⅲ जो भी इन्सान अपने आपको हर हाल में **शिर्क** से महफूज रखने में कामयाब हो गया तो उसके बाकी गुनाह माफ होने की उम्मीद इस कायनात के अकेले मालिक الله ﷻ ने खुद दिला दी है।

2 "इस्लाम" में "दुआ" की तारीफ क्या है ?

अरबी डिक्शनरी "अलकामूस" के मुताबिक दुआ का मतलब है: पुकारना, बुलाना, इल्तिज़ा करना, माँगना सवाल करना और शरीअत मुहम्मदिया ﷺ की इस्तलाह में "दुआ" का मतलब है, हर हाल में ख़्वाह मुश्किल व मुसीबत हो या राहत व आसानी हो "ग़ैब" में सिर्फ एक ﷲ ﷻ ही को पुकारना "यानी ﷲ ﷻ ही से मदद माँगना और ﷲ ﷻ ही से हाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के लिये दरखास्त व सवाल करना।" चुनांऐ ﷲ ﷻ ने अपने महबूब ﷺ की ज़बाने मुबारक से यूँ कहलवाया:

★ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِىْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِىْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ O [سورة البقره : آيت نمبر186]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: (ऐ महबूब ﷺ)और जब आप ﷺ से मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक सवाल करें। (तो आप ﷺ फरमाओ:) यकीनन मैं बिल्कुल नज्दीक हूँ। कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की पुकार। ("दुआ") जब वह मुझे पुकारता है। पस उन्हें भी चाहिये कि मेरा हुकुम माने (मेरी इबादत करें और दुआ भी मुझ ही से मागें।) और मुझ ही पर ईमान लाऐं ताकि वे कामयाबी पा सकें।

"दुआ"दरअसल "इबादत" है और सिर्फ "मअबूद" से ही की जाती है

इस ज़िम्न में चन्द आयात और सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फरमाऐं।

1 (ﷲ ﷻ हमसे रोजाना 05 वक्त की तमाम नमाज़ों की हर रकअत में यह अज़ीम वादा लेता है।) [سورة الفاتحة : آيت نمبر4] O اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ ﷲ ﷻ !) हम तेरी ही इबादत करते हैं। (और करेगें)और (ऐ ﷲ ﷻ !) हम तुझ ही से मदद (यानी दुआ) मांगते हैं और दुआ मांगेगे।)"

नोट: "نَعْبُدُ" और "نَسْتَعِيْنُ" दोनों फअले मुज़ारे के सीगे हैं जो अरबी जबान में हाल ओर मुस्तकबिल दोनों के माने देते हैं इसलिये बयक वक्त दोनों माने दुरुस्त हैं।

नोट: ﷲ ﷻ ने इन्सानों को झजोड़ते हुए कुरआन-ए-पाक़ में सवालिया अनदाज में समझाया है कि "दुआ" सिर्फ मअबूद-ए-हक़ीकी यानी ﷲ ﷻ के साथ ही खास है चुनाँये इर्शाद होता है:

2 [سورة النمل : آيت نمبر63] O اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: (ज़रा बताओ तो) कौन कुबूल करता है बेकरार की फरियाद को जब वह उस(ﷲ ﷻ) को पुकारे, और दूर करता है तक्लीफ को, और तुम्हें जमीन में खलीफा बनाता है (अगलों का) क्या ﷲ ﷻ के साथ और कोई मअबूद भी है? (मगर) तुम (इस हकीकत पर) कम ही गौर व फिक्र करते हो!

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना नोमान बिन बशीर رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया। " اَلدُّعَآءُ هُوَ الْعِبَادَةُ " (तर्जुमा: दुआ "इबादत" ही तो है।) इसके बाद आप ﷺ ने अपनी इस बात के सुबूत में कुरआन-ए-हकीम से दर्जे ज़ैल आयत-ए- मुबारिका भी तिलावत फरमाई:

4 [سورة المومن : آيت نمبر60] O وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِىْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِىْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और तुम्हारे रब ﷻ ने इर्शाद फरमाया है कि मझ से दुआ करो मैं कुबूल करुंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं, अनकरीब वह (बदबख्त) जलीलो -ख्वार हो कर दोज़ख में डाल दियें जाएँगे।

नोट: मन्दर्जा बाला आयात और सहीह हदीस पढ़ लेने के बाद "दुआ" (यानी गायब में मदद के लिये पुकारने) से मुताल्लिक 3 अहम तरीन नताइज निकलते हैं:

I दुआ "इबादत" कि एक आला किस्म होने के बाअस (की वहज से) सिर्फ और सिर्फ एक ﷲ ﷻ की हस्ती के साथ ही खास है।

II दुआ को कुबूल करके तक्लीफ दूर कर देना सिर्फ "मअबूद" के साथ ही खास है इसलिये ﷲ ﷻ के अलावा किसी और से "दुआ" करना गोया उसे "मअबूद" बना लेने के ही मुतरादफ (बराबर) है।

III ﷲ ﷻ के अलावा किसी भी और हस्ती से "दुआ" करने वाला मुतकब्बिर इन्सान शिर्क में मुब्तला होने के बाअस (की वजह से) जलील -व-ख्वार होकर "दोजख" में डाल दिया जाएगा।

"مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ" से दुआ करना शिर्क है क्योंकि वह नफे व नुकसान के मालिक नहीं

इस को समझने के लिये चन्द आयात और सहीह हदीस मुलाहिजा फरमाऐं:

1 قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا O اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ

رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا O [سورة بنى اسرائيل : آيات نمبر56 اور57]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ महबूब ﷺ) ! आप फरमाओ: (ऐ लोगो!) उस (ﷲ ﷻ) के अलावा जिन के मुताल्लिक तुम्हें बड़ा ज़ोअम (घमंड) है, जरा उनको पुकार कर देख लो, ना तो वह तुम से तक्लीफ दूर कर सकते हैं और ना ही तक्लीफ बदल देने पर कादिर हैं। जिन (हस्तियों) को ये पुकार रहे हैं वे तो खुद अपने रब ﷻ की बारगाह में वसीला (नेक आमाल के जरिए कुर्ब) की जुस्तजू में रहते हैं कि कौन उन में से अपने रब ﷻ के ज़्यादा करीब होता है, और उसकी रहमत के उम्मीदवार रहते हैं, और उसके अजाब से डरते रहते हैं, बेशक तुम्हारे रब ﷻ का अज़ाब डरने की ही शै है।"

नोट: मन्दर्ज़ा बाला (ऊपर लिखी) आयत में ﷲ ﷻ ने ना सिर्फ अपने नेक बन्दों को "مِنْ دُوْنِهٖ" फरमाया बल्कि साथ ही उन नेक बन्दों के मुश्किल कुशा और हाजत रवा होने की भी 100 % नफी फरमा दी।

2 مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ O

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ O [سورة المائدة : آيات نمبر75 اور76]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "ईसा बिन मरियम عليه السلام तो नहीं मगर एक रसूल ही बेशक उन से पहले भी बहुत रसूल गुजरे हैं और उनकी माँ एक सच्ची औरत थीं, वह दोनों (माँ बेटा) खाना खाते थे (इन्सान ही तो थे) देखो हम अपनी आयात उनके लिये कैसे खोल कर बयान करते हैं। और फिर उन (मुशरिक ईसाइयों) की तरफ भी देखो कि कैसे उल्टे फिरे जाते हैं। (ऐ महबूब ﷺ !)आप फरमाओ: क्या तुम लोग ﷲ ﷻ के अलावा उन (माँ बेटा) की इबादत करते हो जो ना तुम्हारे नुक्सान का इख्तियार रखते हैं और ना ही नफे का, और ﷲ ﷻ ही(हर दुआ)सुनने वाला इल्म रखने वाला है।"

नोट: मन्दर्ज़ा बाला आयात में ﷲ ﷻ ने ना सिर्फ ईसा बिन मरियम عليه السلام और उनकी वालिदा को "مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ" फरमाया बल्कि उनके मुश्किल कुशा और हाजत रवा होने की भी 100 % नफ़ी फ़रमा दी।

3

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: मेरी शान को इस तरह मत बढ़ा देना जैसा कि नसारा (ईसाइयों) ने ईसा इब्ने मरियम علیہ السلام को (तारीफ में मुबालगा करते हुए उन्हें उनके मुकाम से ही) बढ़ा दिया था, मैं तो उसका बन्दा हूँ बस मुझे ﷲ ﷻ का बन्दा और उसका रसूल ﷺ ही करना। [صحیح بُخاری " کتاب الانبیاء " حدیث نمبر 3445]

नोट: मन्दर्जा बाला हदीस के तहत हमें रसूलुल्लाह ﷺ की गुस्ताखी से बचने के लिये "نُوْرٌ مِّنْ نُوْرِ اللّٰہ" के खुद साखता (खुद से बनाए) गुस्ताखाना अकीदे से तौबा कर लेनी चाहिऐ। क्योंकि ऐसा अकीदा ईसाइयों के सय्यिदना ईसा علیہ السلام को ﷲ ﷻ का बेटा करार देने के शिर्क से मुख्तलिफ (अलग) नहीं। जबकि ना तो ﷲ ﷻ से कोई निकला और ना ही ﷲ ﷻ किसी से निकला है। [سورة الاخلاص : آیت نمبر 3]

"अताई, गैर मुस्तकिल बिज्ज़ात और महदूद" का फ़र्क

ﷲ ﷻ ने इन्सानों की चन्द सिफात को अपनी सिफाते कामिला का मज़्हर बनाया है। मसलन दर्जे जेल आयात में बताई गई इन्सान की सिफाते अताई, गैर मुस्तकिल बिज़ात और महदूद हैं और ﷲ ﷻ की सिफाते कामिला से मुख्तलिफ हैं। इसी लिये सिर्फ "समीअ" और "बसीर" के अल्फाज़ एक जैसे होने से शिर्क नहीं होगा:

1 إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ [سورة الدھر : آیت نمبر 2]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "बेशक हम (ﷲ ﷻ) ने ही इंसान को एक मिले जुले नुत्फे से पैदा किया ताकि उसको आज़माऐ।पस इसे "समीअ" और "बसीर" (यानी सुनने और देखने वाला) बना दिया।"

नोट: मगर जो सिफातें कामिला ﷲ ﷻ ने अपने लिये खास फरमा ली है मसलन: I इबादत और II गैब में मदद के लिये पुकारना" यानी दुआ को इन सिफात को अताई गैर मुस्तकिल बिज़्ज़ात, और महदूद का फर्क रखने के बावजूद मखलूक में मानना खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है।﴿नऊज़ू बिल्लाह﴾इस वाज़ेह हक़ीकत को समझने के लिये मन्दर्जा जेल (नीचे लिखी) सहीह हदीस मुलाहिजा फरमाऐं:

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं: "एक सहाबी رضی اللہ عنہ हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज किया:"يَا رَسُوْلَ اللّٰہِ مَا شَآءَ اللّٰہُ وَشِئْتَ" (**तर्जुमा:** जो ﷲ ﷻ चाहे और जो आप ﷺ चाहें) आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "جَعَلْتَنِیْ لِلّٰہِ عَدْلاً بَلْ مَا شَآءَ اللّٰہُ وَحْدَہٗ" (**तर्जुमा:** तूने मुझे ﷲ ﷻ के बराबर बना दिया। बल्कि यह कहो कि जो अकेला ﷲ ﷻ चाहे)।" [مُسند احمد: حدیث نمبر 3247 ، جلد نمبر 1، صفحہ نمبر 347]

नोट: इस हदीस पर थोड़ा सा गौर करने से यह हकीकत बिलकुल वाजेह हो जाती है कि उस सहाबी رضی اللہ عنہ ने यकीनन रसूलुल्लाह ﷺ को "अताई इख्तियार का मालिक" और गैर मुस्तकिल बिज्ज़ात का अक़ीदा" रखकर ही तो "مَا شَآءَ اللّٰہُ وَ مَا شِئْتَ" कहा था मगर आप ने उसे शिर्क करार दिया और उस सहाबी رضی اللہ عنہ की इस्लाह फ़रमाई। हमारी आँखे खोलने के लिये यही एक मिसाल ही काफी है।﴿अलहम्दु लिल्लाह﴾

औलिया ﷲ को "بِاِذْنِ اللّٰہِ" पुकारने का मसअला

ﷲ ﷻ के महबूब ﷺ ने अपनी भोली भाली उम्मत को शिर्क से 100% पाक़ अकीदे की यूँ तालीम फरमाई है:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस :** सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं: "जब आसमान पर बादलों की सूरत में बारिश के आसार जाहिर होते तो रसूलुल्लाह ﷺ का रगं तब्दील हो जाया करता आप ﷺ कभी घर से बाहर आते कभी अन्दर जाते, कभी आगे जाते कभी पीछे हटते, और जब बारिश शुरू हो जाती तो फिर कहीं जाकर आप ﷺ से खौफ के आसार ज़ाइल होते। सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا फरमाती हैं कि मैंने आप ﷺ से पूछा कि लोग जब बादल देखते हैं तो बारिश की उम्मीद से खुश होते है जबकी आप ﷺ परेशान हो जाते है? तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "ऐ आयशा! इस बात की क्या ज़मानत है कि इन बादलों में अजाब नहीं होगा जैसा कि "कौमे आद" ने जब (अनजाने में) "अज़ाब" को बादल की सूरत में अपने मैदानों के समाने आते देखा तो (ख़ुशी से)कहने लगे: "ये बादल है जो हम पर बरसेगा" (लेकिन बादलों से आग निकली और वे हलाक हो गये।) आप ﷺ जब कभी भी बादल देखते तो ﷲ ﷻ के हुजूर अर्ज करते: ऐ ﷲ ﷻ ! इसे रहमत बना दे।"

[صحیح بُخاری " کتاب التفسیر " حدیث نمبر 4551 ، صحیح مُسلم " کتاب الاستسقاء " حدیث نمبر 2085]

नोट: ﷲ ﷻ की तरफ से बारिश बरसाने की डयूटी सय्यिदना मीकाईल علیہ السلام के पास है और वह फरिशतों के रसूल और जिन्दा भी हैं इसके बावजूद रसूलुल्लाह ﷺ ने कभी भी सय्यिदना मीकाईल علیہ السلام को मदद के लिये नहीं पुकारा, तो यह कैसे होसकता है कि आप ﷺ फौत शदगान से "بِاِذْنِ اللّٰہِ" मदद माँगने का हुक्म दें। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी उम्मत को बारिश मांगने के लिये कभी ये कलमात नहीं सिखाए: "ऐ मेरी उम्मत के लोगों! तुम लोग बारिश के लिये सय्यिदना मीकाईल علیہ السلام को "अताई इख्तियार का मालिक समझ कर" या फिर "गैर मुस्तकिल बिज्ज़ात का अकीदा रखते हुए" सुबह-शाम बार बार यूँ पुकारा करो:

I ﴿المدد یا میکائیل ! ﴾ ، II ﴿یا میکائیل ! نظرِ کرم فرمائیں﴾ ، III ﴿یا میکائیل ! ہم پر بارش نازل فرمائیں﴾................ ﴿نَعُوْذُ بِاللّٰہ ﷻ﴾

सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने इन शिर्किया कलिमात की बजाए "सलातुल इस्तिस्का" यानी बारिश के लिये नमाज के जरीए ﷲ ﷻ की तरफ रूजू करने की तल्कीन फरमाई क्योंकि फ़रिश्तों के डयूटी पर मामूर होने का हर गिज यह मलतब नहीं कि हम फ़रिश्तों को पुकारना शुरू कर दें क्योंकि फ़रिश्तों को "गैब में मदद के लिये पुकारना" खालिसतन शिर्क और नाकाबिले माफी गुनाह है। ﴿नऊजु बिल्लाह ﷻ﴾

गुस्ताखाना नारों और "नमाज-ए-गौसिया" का अन्जाम

ﷲ ﷻ के अलावा अगर सय्यिदना मीकाईल علیہ السلام फ़रिश्तों को भी "गायब में मदद के लिये पुकारना" अगर खालिसतन शिर्क है तो फिर जोश में आकर बुर्जुगों से अंधी अकीदत में मन्दर्जा ज़ेल (नीचे लिखे हुये) गुस्ताखाना नारे लगाना कहाँ की सच्ची तौहीद और कहाँ का सहीह इस्लामी अकीदा है?﴿ फैसला आप के हाथ में है -----! ﴾

I ﴿अल मदद या अली मुश्किल कुशा........ जाने या अली ﴾ II﴿अल मदद या गौसे आज़म ....या शेख अब्दुल कादिर जीलानी ﴾ ﴿नऊजु बिल्लाह ﷻ﴾

III ﴿ या मुईनुद्दीन चिश्ती ....पार लगा दे क़िश्ती ﴾ IV﴿बरी बरी सरकार बरी............. खोट किस्मत कर दे हरी ﴾---﴿नऊजु बिल्लाह ﷻ﴾

नोट: बाज़ गुस्ताख लोगों ने अपनी मुश्किलात व परेशानियों के हल के लिये शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहिमहुल्लाह (अल्मुतवफ्फा 561हि) से खुद ही एक गुस्ताखाना "नमाज-ए- गौसिया" भी मन्सूब कर रखी है।

4 नमाज़-ए-गौसिया का तरीक़ा "हाजत पूरी होने के लिये सलातुल इसरार भी निहायत ही मौस्सर है.......इसे "नमाज़-ए-गौसिया" भी कहते हैं---- इसकी तर्कीब यह है कि बाद नमाज मग़रिब सुन्नतें पढ़ें कर दो रकात नाफिल पढ़े और बेहतर यह है कि "अल्हम्दु लिल्लाह" के बाद हर रकाआत में 11 बार "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" पढ़े। सलाम के बाद اللّٰه ﷻ की हम्दो सना करे फिर नबी ﷺ पर 11 बार दरुद व सलाम अर्ज करे ---- फिर इराक़ की जानिब 11 कदम चले और हर कदम पर कहें: يَا غَوْثَ الثَّقَلَيْنِ وَيَا كَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِيْ وَامْدِدْنِيْ فِيْ قَضَاۗءِ حَاجَتِيْ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتُ
(तर्जुमा: ऐ जिनों और इन्सानों के फरियाद रस! और ऐ माँ बाप की तरफ से बुजुर्ग मेरी फरियाद को पहुँचिये और मेरी हाजत में मेरी मदद करिये। ऐ हाजतों को पूरा करने वाले ----" [بریلوی : مولانا امجد علی قادری "بہارِشریعت حصہ چہارم" صفحہ 263 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس عطار قادری "فیضان سنت" فضائل نوافل صفحہ 1054]

नोट: कुरआन-ए- हकीम ने वाजेह तौर पर उन लोगों के अन्जाम का भी जिक्र कर दिया है जो औलिया और बुर्जुगाने दीन वगैरह को اللّٰه ﷻ के अलावा दुआ के लिये पुकारते हैं चुनाँचे इर्शाद होता है।

✪ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ○ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ○ [سورة الاحقاف : آيات نمبر 5 اور 6]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और उससे बढ़ कर गुमराह और कौन होगा ? जो اللّٰه ﷻ को छोड़ कर ऐसों को (दुआ के लिये) पुकारता है जो कयामत तक उसकी पुकार ना सुन सकें, बल्कि उसके पुकारने से बेखबर हों। और जब (कयामत में) लोगों को जमा किया जाए तो वे हस्तियाँ उसकी दुशमन हो जाएं। और उसकी इबादत (पुकार) से साफ इन्कार कर जाऐं। "

اللّٰه ﷻ के फरमान पर रसूलुल्लाह ﷺ के सुन्नत अज्कार

اللّٰه ﷻ के हुक्म की तामील करते हुए रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक उसवा-ए-हसना की झलकियाँ मुलाहिजा फरमाऐं।

1 وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۗ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ [سورة الانعام : آيت نمبر 17]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और (ऐ बन्दे) अगर اللّٰه ﷻ तुझे किसी तक्लीफ में डाल दे तो उस तक्लीफ को दूर करने वाला कोई नहीं मगर वही (اللّٰه ﷻ), और (ऐ बन्दे) अगर वह (اللّٰه ﷻ) तुझको कोई फायदा पहुँचाना चाहे तो (اللّٰه ﷻ) हर चीज पर पूरी तरह कुदरत रखने वाला है।" ,

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** "सय्यिदना मुगीरह बिन शैबा رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि जब भी रसूलुल्लाह ﷺ फर्ज़ नमाज स फारिग होते तो इन अल्फाज़ का ज़िक्र फरमाया करते": "اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ" (तर्जुमा: ऐ اللّٰه ﷻ जो तू अता फरमाना चाहे उसे कोई उसे कोई रोक नहीं सकता और जो तू रोक ले उसे कोई अता नहीं कर सकता। और किसी की दौलत व मन्सब उसे तेरे अजाब से नहीं बचा सकती)" [صحيح بُخارى "كتابُ الا ذان" حديث نمبر 844 ، صحيح مُسلم "كتابُ الصلوٰة" حديث نمبر 1342]

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसूद رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि जब कभी रसूलुल्लाह ﷺ को कोई तक्लीफ व परेशानी पहुंचती तो आप ﷺ का तकिया कलाम यही हुआ करता था: "يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ" तर्जुमा: एक खुद से जिन्दा, हर शै को थामने वाले मैं तेरी रहमत के साथ तेरी मदद का सवाल करता हूँ।" [المستدرک للحاكم "كتابُ الدُعا" حديث نمبر 1875 ، جلد نمبر 1، صفحہ نمبر 689]

रसूलुल्लाह ﷺ का सहाबा किराम की तर्बियत फरमाना

اللّٰه ﷻ के महबूब सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की तर्बियत फरमाने की झलकियाँ मुलाहिज़ा फरमाऐं।

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु हुरैरह رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे नसीहत फरमाई: "तुम अपने लिये नफ़ाबक्श शै के हुसूल की ख़ातिर मेहनत और कोशिश करो। (ज़ाहिरी अस्बाब इख़्तियार करो) "وَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ" (तर्जुमा: और फ़िर اللّٰه ﷻ से मदद मांगों) और काहिली और सुस्ती न करना (फिर) अगर तुझे कोई नुक़्सान पहुँचे तो ऐसे मत कहना कि मैं (इस तरह)कर लेता तो ऐसे -ऐसे हो जाता। बल्कि यही कहना कि जो اللّٰه ﷻ ने मुक़द्दर किया और जो उसने चाहा किया क्योंकि "अगर मगर "शैतान के अमल खोल देता है ". [صحيح مُسلم "كتابُ القدر" حديث نمبر 6774]

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ का बयान है कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे सवारी पर बैठा हुवा था तो आप ﷺ ने (नसीहत करते हुए) इर्शाद फरमायाः "ऐ बेटे ! तु اللّٰه ﷻ के अहकाम की हिफ़ाजत कर اللّٰه ﷻ तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगा। اللّٰه ﷻ के हुकूक़ का ख्याल रख तू उसे अपने सामने पाएगां। "اِذَا سَاَلْتَ فَاسْاَلِ اللّٰهَ وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ" (तर्जुमा: और जब तू सवाल करे तो सिर्फ اللّٰه ﷻ से करना और जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ़ اللّٰه ﷻ से मदद तलब करना) और जान ले कि पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो اللّٰه ﷻ चाहे और अगर اللّٰه ﷻ चाहे। क़लम उठ गए और सहीहफे खुश्क हो गए।"[नोट: इमाम तिर्मिज़ी رحمہ اللہ ने इस हदीस की सनद को "हसन सहीह" कहा है] [جا مع ترمذی "كتاب صفة القيامة" حديث نمبر 2516]

नोटः कुरबान जाएें सहाबा किराम رضی اللہ عنہم की "खुश अक़ीदगी "पे कि रसूलुलाह ﷺ की वाज़ेह नसीहतें सुनने के बाद आज के "गुस्ताख उलमा "और अवाम की तरह दर्जे ज़ैल सवालात हरगिज़ नहीं पूछेः

I या रसूलुल्लाह ﷺ हम पानी में डूब रहे हैं तो किसी इन्सान को मदद के लिये बुलाना क्या शिर्क है ? II हम भूखे हों तो अपनी माँ से रोटी -सालन माँगना क्या शिर्क है;

III या रसूलुल्लाह ﷺ हम मजबूर हों तो किसी से कर्ज़ मांगना क्या शिर्क है? IV अपना वज़न उठाना हो तो किसी आदमी को अपनी मदद के लिये बुलाना क्या शिर्क है ? ❁ नऊजु बिल्लाह ❁

नोटः सहाबा किराम رضی اللہ عنہم ने ऐसे गुस्ताख़ाना सवालात नहीं किये। क्योंकि वे बख़ूबी जानते थे कि रसूलूल्लाह ﷺ की वाजेह नसीहतें "गैब में मदद के लिये पुकारने" यानी दुआ से मुताल्लिक हैं।

सहाबा किराम رضی اللہ عنہم की ख़ुश अक़ादगी की मिसालें:

اللّٰه ﷻ के महबूब सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की तर्बियत फरमाने का नतीजा यह निकला कि रसूलुल्लाह ﷺ की दुनियवी जिन्दगी के दौरान भी "गैब में मदद "यानि दुआ के लिये ना तो रसूलुल्लाह ﷺ पुकारा और ना ही किसी फ़रिश्ते को पुकारा

5 बल्कि वह तो सिर्फ अल्लाह ﷻ ही को पुकारते थे।

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने जासूसी के लिये (10 आदमियों की) एक जमाअत रवाना की और उन पर आसिम बिन साबित अन्सारी رضي الله عنه को अमीर मुकर्रर फरमाया जब वह असफान और मक्का मुकर्रमा के दरमियान पहुँचे तो "बनू लिहयान" ने 100 तीर अन्दाजों का लश्कर रवाना किया जो उनकी खोज लगाता हुआ वहाँ पहुँचा और उन पर तीर बरसाना शुरू किये। इस पर सय्यिदना आसिम बिन साबित अन्सारी رضي الله عنه ने अर्ज किया: "اَللّٰهُمَّ اَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ ﷺ" (तर्जुमा: ऐ अल्लाह ﷻ हमारे हाल की खबर हमारे नबी ﷺ को फरमा दे) फिर वे 7 लोग शहीद कर दिये गये और बाकी 3 को कैद कर लिया। और उनमें से भी 2 शहीद कर दिये गये।------" [صحیح بُخاری " کتابُ المغازی " حدیث نمبر 4086]

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में कुछ लोग हाजिर हुए और अर्ज किया कि हमारे साथ कुछ लोगों को भेजें जो हमें कुरआन व सुन्नत की तालीम दे तो आप ﷺ ने 70 अन्सारियों को उनके साथ रवाना किया जिनको "कुर्रा" कहा जाता है था---उन लोगों ने 70 अन्सारियों को मन्जिल पर पहुँचने से पहले ही शहीद कर दिया तो उन हजरात ने मरते दम यूँ दुआ की: "اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ عَنَّا نَبِيَّنَا اَنَّا قَدْ لَقِيْنَاكَ فَرَضِيْنَا عَنْكَ وَرَضِيْتَ عَنَّا" (तर्जुमा: "ऐ अल्लाह ﷻ! हमारे मुताल्लिक हमारे नबी ﷺ को इत्तला फरमा दे कि हम तुझ से मुलाकात कर चुके हैं। हम तुझ से राज़ी और तू हमसे राज़ी।)----जिब्रील عليه السلام ने नबी को खबर दी तो नबी ﷺ ने अपने असहाब رضي الله عنهم से इर्शाद फरमाया कि तुम्हारे साथी शहीद कर दिये गये। और उन्होंने ये दुआ की: "اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ عَنَّا نَبِيَّنَا اَنَّا قَدْ لَقِيْنَاكَ ------" [صحیح مُسلم " کتابُ الامارة " حدیث نمبر 4917]

नोट: सहाबा किराम رضي الله عنهم ने रसूलुल्लाह ﷺ की दुनियवी जिन्दगी में भी आप ﷺ को "गैब में मदद के लिये नहीं पुकारा": बल्कि अल्लाह ﷻ से दुआ करके आप ﷺ तक अपने हाल की खबर पहुँचाई क्योंकि सहाबा किराम رضي الله عنهم बखूबी जानते थे कि अल्लाह ﷻ के अलावा किसी भी दूसरी हस्ती को "गैब में मदद के लिये पुकारना" खालिसतन **शिर्क** और नाकाबिले माफी गुनाह है----। ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾

अल्लाह ﷻ की मदद का जरीआ: "नेक आमाल"

अल्लाह ﷻ की मदद हासिल करने का एक बेहतरीन "जरीआ" और "वसीला" नेक आमाल भी हैं चुनाँचे इर्शाद होता है:

1 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ O [سورة البقرہ : آیت نمبر 153]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: ऐ ईमान वालों! (अल्लाह ﷻ की) मदद तलब करो सब्र और नमाज के साथ, बेशक अल्लाह ﷻ सब्र करने वालों के साथ है।"

नोट: इस आयत का हर गिज़ ये मतलब नहीं है कि हम ये नारे लगाना शुरू कर दें: **I** ﴿अल मदद या सब्र! करम फरमा﴾ **II** ﴿अल मदद या नमाज! रहम फरमा﴾-- ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾ बल्कि आयत के आखिरी हिस्से से जाहिर है कि "सब्र" वालों को अल्लाह ﷻ की मदद नसीब होती है। जबकि "नमाज" तो सब से ज्यादा अल्लाह ﷻ के कुर्ब और जन्नत का जरीआ है। चुनाँचे:

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सोबान رضي الله عنه ने रसुलूल्लाह ﷺ से तीन बार पूछा कि मुझे वह काम बताइए जो अल्लाह ﷻ को सबसे ज्यादा पसंद हो। और मुझे जन्नत में ले जाए तो आप ﷺ ने फरमाया:"तुम सज्दे बहुत ज्यादा अदा किया करो कि हर सज्दे से अल्लाह ﷻ तेरा एक दर्जा बुलन्द और तेरा एक गुनाह माफ करेगा।" [صحیح مُسلم " کتابُ الصلوٰة " حدیث نمبر 1093]

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना रबीआ बिन काब رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि मैं रसुलुल्लाह ﷺ के पास रहा करता और आप के पास वजू का पानी और हाजत का पानी लाया करता। एक मर्तबा आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया:"मांग क्या मांगता है।" मैंने अर्ज किया मैं जन्नत में आप ﷺ की रिफाकत (साथ) का सवाल करता हूँ। आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "और कुछ।" मैंने अर्ज किया बस यही काफी है आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "अच्छा तो फिर कसरते सुजूद (यानी नफ्ली नमाजों के जरीए) से मेरी मदद कर।" [صحیح مُسلم " کتابُ الصلوٰة " حدیث نمبر 1094]

4 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "अल्लाह ﷻ फरमाता है: जो इंसान मेरे किसी वली के साथ दुश्मनी रखे तो मेरा उसके खिलाफ ऐलाने जंग है। और मेरा बन्दा मेरा **कुर्ब** उस से ज्यादा किसी और चीज से हासिल नहीं करता कि जो मैंने उस पर फर्ज कर रखी हैं। मेरा बन्दा नवाफिल के जरीए मेरा कुर्ब हासिल कर लेता है हत्ता कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ। जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है, मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, मैं उसका हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है, मैं उसका पाँव बन जाता हूँ जिस से वह चलता है। और अगर वह मुझसे कोई चीज मांगता है तो मैं उसे अता कर देता हूँ। और अगर वह (किसी दुशमन के मुकाबले पर मेरी मदद तलब करते हुए) मेरी पनाह तलब करता है तो मैं उसे अपनी पनाह देता हूँ।" [صحیح بُخاری " کتابُ الرقاق " حدیث نمبر 6502]

नोट: इस हदीस की यह तफ्सीर बयान करना कि अल्लाह ﷻ उस नेक इन्सान के आज़ा बन जाता है या वह बन्दा "खुदाई सिफात" का हामिल बन जाता है "फिर्का हुलूलिया" का बातिल अकीदा है और यह खालिसतन **शिर्क** और नाकाबिले माफी गुनाह है। इस सहीह हदीस के आखिरी हिस्से ने इस "चोर दरवाजे" को बन्द कर दिया है क्योंकि वह बन्दा खुद भी बदस्तूर अल्लाह ﷻ का मुहताज रहता है बल्कि अपने दुशमन का मुकाबला करने के लिये भी अल्लाह ﷻ ही की पनाह तलब करता है। इसलिये इस हदीस में मैं "उसका कान बन जाता हूँ उसकी आँख बन जाता हूँ उसका हाथ बन जाता हूँ उसका पाँव बन जाता हूँ" से मुराद सिर्फ और सिर्फ यह है कि उस नेक बन्दे के अल्लाह ﷻ की फरमाँबरदारी में लगने के बाअस (की वहज से) "उसके आजा गुनाहों से महफूज हो जाते हैं और उसकी अव्वलीन तर्जीह अल्लाह ﷻ की ज़ात बन जाती है। जैसा कि खुद हमारे इमामे आज़म, इमामुल अंबिया वल मुरसलीन, शफीउल मुजनबीन, रहमतुल्लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में अल्लाह ﷻ ने इर्शाद फरमाया:

5 قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ O [سورة الانعام : آیت نمبر 162]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ महबूब ﷺ)! आप फ़र्माओ बेशक मेरी नमाज़, और मेरी कुर्बानी, और मेरा जीना, और मेरा मरना अल्लाह ﷻ ही के लिए है, जो तमाम जहानों का पालनें वाला है।"

अल्लाह ﷻ की मदद का ज़रिया: "फ़रिश्ते"

अल्लाह ﷻ ने अपने महबूब ﷺ की खिदमत पे फ़रिश्तों को मआमूर फ़रमाया था मगर आप ﷺ ने कभी भी फरिश्तों को नहीं पुकारा चुनाँचे :

1 .... فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ O [سورة التحریم : آیت نمبر 4]

❻ **तर्जुमा आयत-ए-मुबारका:** "पस उनका (यानी रसूलुल्लाह ﷺ का) मददगार اللہ ﷻ है और जिब्राईल عليه السلام और मौमिनीन और उसके फरिशते भी उनके मददगार हैं।"

नोट: इस आयत में اللہ ﷻ ने अपने अलावा जिब्राईल عليه السلام मौमिनीन और फरिश्तों को भी रसूलुल्लाह ﷺ का मददगार कहा तो इसका मतलब हर गिज यह नहीं कि उस वक्त यह नारे लगाए जाते थे: ❶﴿नजरे करम या जिब्राईल!﴾ ❷﴿अल मदद य अबु बक्रो उमर!﴾ ❸﴿ या शुहदाए बद्रो - उहद! मेरी मदद फरमाएं﴾---------- ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾ बल्कि एक आम फहम इन्सान भी ऐसा बेहूदा नतीजा हर गिज नहीं निकालेगा। आयत से वाज़ेह मुराद यह है कि اللہ ﷻ ने रसूलुल्लाह ﷺ को जानिसार सहाबा किराम رضی اللہ عنہم अता फरमाए और आप ﷺ की खिदमत पे फ़रिश्तों को भी मामूर फरमाया था। मगर "ग़ैब में मदद के लिये पुकारना" सिर्फ اللہ ﷻ के साथ ही खास है चुनाँचे इसी "तशरीह" के सुबूत में दर्जे ज़ेल 2 आयात मुलाहिजा फरमाए:

❷ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭهُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ O [سورۃ الانفال : آیت نمبر 62]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और (ऐ महबूब ﷺ) अगर वे (मुनाफ़कीन) आपको धोका देना चाहें तो اللہ ﷻ आप के लिये काफी है। वही जिसने आपकी मदद की अपने से और मोमिनीन के ज़रीऐ।"

❸ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُرْدِفِيْنَ O [سورۃ الانفال : آیت نمبر 9]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और (ऐ महबूब ﷺ) जब आप आपने रब से फरियाद करते थे तो उसने आप की सुन ली (फरमाया कि) मैं आप की मदद करने वाला हूँ 1000 फ़रिश्तों की कतार से।"

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बात की तस्दीक फरमाई: "जो कोई (मुसलमान) रात को सोने से पहले "आयतुल कुर्सी" पढ़ ले तो पूरी रात (اللہ ﷻ की तरफ से) उसकी हिफाज़त के लिये एक फ़रिश्ता मुकर्रर कर दिया जाता है और शैतान सुबह तक उसके पास नहीं आ सकता।"

[صحیح بُخاری "کتابُ الوکا لۃ" حدیث نمبر 2311]

नोट: اللہ ﷻ ने उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की हिफाज़त पे भी अपने फ़रिश्तों को मामूर फरमा रखा है मगर "उन फ़रिश्तों को पुकारना" खालिसतन **शिर्क** और नाकाबिले माफी गुनाह है ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾

اللہ ﷻ की मदद का जरीआ: "जाहिरी असबाब और इन्सान"

اللہ ﷻ ने इस दुनिया के निजाम को इम्तिहान के तौर पर जाहिरी अस्बाब वगैरह के साथ जोड़ रखा है: मसलन सूरज को दुनिया में जिन्दगी की बका का, पानी को प्यास मिटाने का, खाने को भूक मिटाने का, जरीआ बनाया है, और दीन को दुनिया में फ़ैलाने का ज़रिया अपने बन्दे को बनाया है चुनाँए इसी ज़िम्न में चन्द आयात मुलाहिज़ा फरमाएं।

❶ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ O [سورۃ مُحمّد : آیت نمبر 7]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "ऐ ईमान वालों अगर तुम اللہ ﷻ (के दीन) की मदद करोगे तो اللہ ﷻ तुम्हारी मदद करेगा। और तुम्हारे कदम भी जमा देगा।

❷ ....قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ.......... O [سورۃ آل عمران : آیت نمبر 52]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: पूछा (ईसा बिन मरियम عليه السلام ने) कौन है मेरा मददगार اللہ ﷻ की तरफ? उनके साथी बोले हम اللہ ﷻ (के दीन) के मददगार हैं।"

❸ ....وَتَعَاوَنُوْا عَلَي الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ.......... O [سورۃ المائدۃ : آیت نمبر 2]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(ऐ ईमान वालों) मदद करो (एक दूसरे की) नेकी और परहेज़गारी के कामों में। और मत मदद करो (एक दूसरे की) गुनाह और ज़्यादती के कामों में।"

नोट: मन्दर्जा बाला आयात (ऊपर लिखी आयतों) पढ़ने के बाद "ग़ैब में मदद के लिये पुकारने" यानी दुआ करने से मुताल्लिक 02 अहम तरीन नताइज निकलते हैं।

❶ जाहिरी अस्बाब इख़्तियार करने का यह मतलब हर गिज नहीं है कि उन अस्बाब को भी पुकारा जाए। (अल मदद या सूरज!) (अल मदद या पानी) ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾

❷ जाहिरी अस्बाब से मदद लेना दुरुस्त है मगर اللہ ﷻ के अलावा किसी भी हस्ती से "ग़ैब में मदद मांगना" खालिसतन **शिर्क** और नाकाबिले माफी गुनाह है! ﴿नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴾

اللہ ﷻ की मदद की जरीआ: "मौजिज़ात"

اللہ ﷻ ने अपने महबूब सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के जरीए "हजारों "मौजिज़ात" का ज़ुहूर फरमाया मसलन:

❶ नबी ﷺ की दुआ की बर्कत से शक्कुल कमर (चाँद दो टुकडे) हुवा: [صحیح بُخاری "کتابُ التفسیر" حدیث نمبر 4868، صحیح مُسلم "کتاب صفۃ القیا مۃ" حدیث نمبر 7071]

❷ नबी ﷺ की दुआ से बिल्कुल ऐन उसी वक्त बारिश हो गई: [صحیح بُخاری "کتابُ الاستسقاء" حدیث نمبر 1013 ، صحیح مُسلم "کتاب صلاۃالاستسقاء" حدیث نمبر 2078]

❸ नबी ﷺ की दुआ से सय्यिदना अबूहुरैरह رضی اللہ عنہ को कुव्वते हाफिज़ा नसीब हुई। [صحیح بُخاری "کتابُ العلم" حدیث نمبر 119، صحیح مُسلم "کتابُ الفضائل" حدیث نمبر 6397]

❹ नबी ﷺ के हाथ मुबारक फेरने की बरकत से सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ऐतक رضی اللہ عنہ की टूटी हुई पिंडली उसी वक्त बिल्कुल सहीह हो गई।
[صحیح بُخاری "کتابُ المغازی" حدیث نمبر 4039]

❺ नबी ﷺ के हाथ मुबारक से पानी का चश्मा निकला तो 1500 सहाबा किराम ने पिया, वज़ू किया और महफूज भी कर लिया।
[صحیح بُخاری "کتابُ المغازی" حدیث نمبر 4152]

❻ नबी ﷺ की शिफ़ाअत से मैदाने महशर में गुनाहगारों की निजात होगी।
[صحیح بُخاری "کتابُ التفسیر" حدیث نمبر 4712، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 480]

اللہ ﷻ "हयातुन्नबी ﷺ का मसला" और सहाबा किराम رضی اللہ عنہم का अकीदा"

तमाम मख्लूकात में सब से आला "बर्जखी ज़िन्दगी" (क्रब की ज़िन्दगी) सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हासिल है। मगर सहाबा किराम رضی اللہ عنہم जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ की ज़िन्दगी में हजारों हिस्सी "मौजिज़ात" देखे थे। आप ﷺ की वफात के बाद कभी ये जुर्रत नहीं की के बर्जखी "ज़िन्दगी" को आप ﷺ की "दुनियावी ज़िन्दगी" पर कयास करते हुए आप ﷺ की "कब्रे मुबारक" पर जाकर कोई मोजज़ा तलब करें। क्योंकि वह जानते थे कि ऐसी हरकत करना गुस्ताखी है। चुनाऐं :

7 ★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि सय्यिना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ के जमाने में जब लोग कहत साली का शिकार हो जाते तो आप सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज करते। "ऐ ﷻ اللہ बेशक हम पहले अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ की बर्कत से) तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। (आप ﷺ की वफात के बाद) अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ले कर आये हैं। पस (उनकी दुआ की बर्कत से) हम पर बारिश नाज़िल फरमा। (सय्यिदना अनस رضی اللہ عنہ फरमाते हैं) पस यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती।"
[صحیح بُخاری " کتاب الا ستسقاء " حدیث نمبر1010]

नोट: सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की आला तरीन "बर्ज़खी जिन्दगी" के बावजूद आप ﷺ से कब्रे मुबारका पर जाकर "दुआ नहीं की।" क्योंकि ﷻ اللہ के अलावा किसी भी और हस्ती से दुआ करना यानी (गैब में मदद मांगना) खालिसतन **शिर्क** और नाकाबिले माफी गुनाह है﴾नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴿ मज़ीद यह कि सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ ने रसूलुल्लाह ﷺ की कब्रे मुबारक पे जाकर आप ﷺ से "वसीले के तौर पर" दुआ नहीं करवाई बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ला कर उनसे दुआ करवाई और यूँ अपने अमल से उम्मते मुहम्मदिया ﷺ को अकीदा समझा दिया कि "सहीह वसीला शख्सी" किसी बुर्जुग की कब्रे मुबारक पर जाकर उनसे मांगना या दुआ करवाना हर गिज़ नहीं है। बल्कि "दुनिया में मौजूद" नेक जिंदा आदमी से दुआ करवाना है और इस बात पर किसी का भी इख्तिलाफ नहीं है। ﴾अलहम्दु लिल्लाह﴿

"हयातुन्नबी ﷺ का मसला" और गुस्ताखाना वाकिआत

सहाबा किराम رضی اللہ عنہم के सहीह अकाइद के बरअक्स (खिलाफ) "शैतान" ने कुछ लोगों को कुरआन की सख्त मुखालिफत करते और "मुतशाबिहात" के पीछे लगाते हुए गुस्ताखाना वाकिआत उम्मत में फैला कर गुमराही का दरवाजा खोल दिया है। इसी जिम्न में एक "गुस्ताखाना और झूठा वाकिआ" मुलाहिज़ा फरमाएं: "सय्यिद अहमद रिफाइ मशहूर अकाबिरे सूफिया में से एक हैं उनका किस्सा मशहूर है कि जब 555 हि० में हज से फारिग होकर वे कब्रे रसूल ﷺ के मुकाबिल खड़े हुए तो दो अरबी अशआर पढ़े -----------------

उर्दु में तर्जुमा: दूरी की हालत में अपनी रूह को आस्ताना-ए-अकदस भेजा करता था वो मेरी नायब बनकर आस्ताना -ए - अकदस चूमती थी, अब जिस्मों की हाजिरी की बारी आई है तो अपना हाथ मुबारक अता फरमाएं ताकि मेरे होंट उसको चूमें।" इस पर कब्र शरीफ से हाथ मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। कहा जाता है कि उस वक्त 90,000 का मजमा मस्जिदे नबवी ﷺ में मौजूद था, जिन्होंने इस वाकिए को देखा उनमें पीराने पीर शेख अब्दुल कादिर जीलानी رحمہ اللہ का नाम भी जिक्र किया जाता हैं"
[دیو بندی : مولانا شیخ زکریا سہارنپوری "فضائل حج "نویں فصل صفحہ130 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس قادری "فیضان سنت "مصافحہ و معانقہ کی سُنتیں صفحہ654]

नोट: सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا रसूलुल्लाह ﷺ की वफात के बाद 47 साल तक कब्रे मुबारक वाले हुजरे में रहीं। मगर आप ﷺ ने कभी भी रसूलुल्लाह ﷺ की "बर्ज़खी जिन्दगी" में आप ﷺ से कब्रे मुबारक पर मुलाकात नहीं की। हत्ता कि जब आप رضی اللہ عنہا ने इज्तिहादी गलती के बाअस (की वजह से) सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ से जंग का फैसला किया तब भी रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ मुबारक बाहर नहीं निकाला।

सिर्फ "सहीह अहादीस" ही क्यों जरुरी है ?

ﷻ اللہ के महबूब ने पहले ही से अपनी उम्मत को मन घड़त और ज़ईफ़ सनद वाली अहादीस (हदीसों) के फित्नों से आगाह फरमा दिया था। चुनाँचे तीसरी सदी हिजरी के मशहूर मुहद्दिस अमीरुल मुस्लिमीन फ़ील हदीस इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज़ कुरैशी رحمہ اللہ (अल मतवफ्फी 261 हि०) ने अपने शोहरा-ए-आफाक मज्मूआ -ए - हदीस "सहीह मुस्लिम" के मुकदमें में अपनी किताब तस्नीफ करने की बुनयादी वजह कसरत से ज़ईफ़ व मुनकर रिवायात की मौजूदगी ही बताई है और तक़रीबन 100 अहादीस व रिवायात इस बात की दलील पर बयान की हैं कि हदीस का "सहीह होना" क्यों जरुरी है। मनघड़त और ज़ईफ़ सनद वाली अहादीस के शैतानी फित्नों से बचने के लिये सिर्फ एक मर्तबा खुद भी "सहीह मुस्लिम का मुकदमा" जरुर मुलाहिज़ा फरमाएं।

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मुझ पर झूठ मत बाँधों (यानी झूठी अहादीस मत बयान करो)जिस किसी ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बाँधा (झूठी हदीस बयान की)तो बेशक उस शख्स का मुकाम दोजख में बनेगा।"
[صحیح مُسلم " ا لمُقدمة " حدیث نمبر1]

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसुलूल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "किसी भी शख्स को झूठा होने के लिये यही बात काफी है कि वह हर सुनी सुनाई बात को (तहकीक किये बगैर कि वह बात, या हिकायत, या वाकिआ या हदीस सच है कि झूठ) आगे (लोगों में) बयान कर दे।"
[صحیح مُسلم " ا لمُقدمة " حدیث نمبر8]

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबूहुरैरह رضی اللہ عنہ रिवायत करते है कि रसुलूल्लाह ﷺ ने ईर्शाद फरमाया: "आखिरी दौर में फ़रेबकार झूठे लोग होंगें। वे तुम्हारे पास ऐसी हदीसें लाऐंगे जो ना तुम ने और ना तुम्हारे आबा व अजदाद ने सुनी होंगी,पस खुद को उनसे दूर रखना कहीं वे तुम्हें गुमराही और फित्ने में मुब्तला ना कर दें।
[صحیح مُسلم " ا لمُقدمة " حدیث نمبر16]

4 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ इर्शाद फरमाते हैं कि "बअज़ औकात शैतान किसी मज्मे में इन्सानी शक्ल में आकर हदीस बयान करता है। और जब मज्मा छँठ जाता है तो कोई कहता है कि यहाँ एक शख्स आया था जिसने यह हदीस बयान की उसकी शक्ल तो याद है लेकिन उसका नाम और पता मालूम नहीं है और वह "शैतान" होता है। "
[صحیح مُسلم " ا لمُقدمة " حدیث نمبر17]

"सहीह अहादीस" की 08 बेहतरीन किताबें:

अलहम्दु लिल्लाह ﷻ! मुहद्दिसीने किराम رحمہم اللہ ने अहादीस की सनदों में बड़ी महनत से छानबीन करके ना सिर्फ ज़ईफ मनघड़त सनदों वाली अहादीस की निशानदेही कर दी बल्कि अलग से "सहीह अहादीस के मज्मूए" भी जमा फरमाए। चुनाँचे बर्रे सगीर पाक व हिन्द में "अहले सुन्नत" का दावा करने वालों तीनों मसालिक: I बरेल्वी II देओबंदी III सल्फी(अहले हदीस)के मुशतर्का बुजुर्ग शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहल्वी رحمہ اللہ (अल मुतवफ्फा 1176 हि०) ने "हुज्जतुल्लाहिल बालिगह" में आठ बेहतरीन किताबों का जिक्र किया:

न०	1	2	3	4	5	6	7	8
शुमार किताबें:	सहीह बुखारी	सहीह मुस्लिम	जामे तिर्मिजी	सुनन अबी दाऊद	सुनन नसाई	सुनन इब्ने माजा	मौअत्ता लिल मालिक	मुस्नद अहमद
कुल अहादीस	7,563	7,563	3,956	5,274	5,761	4,341	1,720	27,647

8 सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम का “बुलन्दतरीन मकाम”

मन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) 8 किताबों में से पहली 6 को “सिहाहे सित्ता” भी कहा जाता है और फिर उन में से पहले 2 मजुमुओं: सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम को “सहीहहैन” कहा जाता है क्योंकि इनकी अहादीस 100 प्रतिशत सहीह हैं जब्कि बाकी 6 किताबों में करीबन 80% अहादीस सहीह जब्कि कुछ जईफ सनदों वाली अहादीस भी मौजूद हैं। “सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम” के मुताल्लिक शाह वलीउल्लाह देहल्वी رحمہ اللہ (अलमुतवफ्फी 1176 हि०) लिखते हैं: “सहीहहैन के मुताल्लिक” मुहद्दिसीन का इत्तफाक है कि उनमें जितनी मुत्तसिलुल अस्नाद मरफू अहादीस है वे सब कतई -उ-उस्सेहत है और “बिला शुबाह” सहीह है। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम दोनों कुतुब उनके मुसन्निफीन तक तवातुर के साथ मन्कूल हैं और किसी का भी इस से इख्तिलाफ नहीं और उलमा-ए-किराम का कौल है कि जो कोई भी इनको हिकारत की नज़र से देखता है वह अहले बिदअत मे से है और ऐसे शख्स का रास्ता मुस्लमानों का रास्ता नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि “सहीहहैन” का बाकी कुतुब से मुकाबला करो तो यह हकीकत तुम पर खुद खुल जाएगी और साफ नज़र आजाएगा कि “सहीहहैन” और बाकी कुतुबे अहादीस में मशरिक़ और मगरिब का फर्क है।”

[حُجَّۃُ اللّٰہِ الْبَالِغَۃ (مترجم) : حصہ اوّل ، صفحہ نمبر 451]

"कलमा गो मुसलमान" भी शिर्क की आफत में फंस सकता है

اللّٰه ﷻ ने “वाहिद नाकाबिले माफी जुर्म” **शिर्क** के मुताल्लिक वाज़ेह तौर पर फरमाया:

1 اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ○ [سورۃ الانعام : آیت نمبر 82]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ जुल्म को नहीं मिलाया तो उन्हीं लोगों के लिये अमन है और वही लोग हिदायत याफ्ता हैं।”

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसूद رضی اللہ عنہ का बयान हे कि इस आयत-ए- मुबारका के नुजूल पर हम ने परेशान होकर रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा: वह कौन है जो जुल्म से बचा होगा ? तो आप ﷺ ने फरमाया: इस से मुराद आम जुल्म नहीं बल्कि **शिर्क** हैं।” [صحیح بُخاری "کتابُ التفسیر" حدیث نمبر 4629 ، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 327]

नोट: रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीह ने बिल्कुल वाज़ेह कर दिया के एक कलमा गो मुसलमान भी अपने ईमान के साथ शिर्क की आमिजश कर सकता है, अलबत्ता उम्मत का “एक गिरोह” इस आफत से महफ़ूज़ रहेगा।

तर्जुमा सहीह हदीस: रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: जो कोई भी मुसलमान फ़ौत हो जाए और उसकी नमाजे जनाजा में 40 ऐसे लोग शामिल हो जो اللّٰه ﷻ के साथ शिर्क ना करते हो तो اللّٰه ﷻ उस मरने वाले के हक में उन लोगों की सिफारिश कुबूल फरमा लेता है।” [صحیح مُسلم "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 2198]

नोट: अब तो सारे ही शैतानी वसवसे खत्म हो गए क्यूँकी जनाज़े तो सिर्फ मुसलमान ही पढ़ते हैं। लिहाज़ा जनाज़ा पढ़ने वाला कलमा गो मुसलमान भी **शिर्क** में मुब्तला हो सकता है। ﴾नऊजु बिल्लाह ﷻ﴿

उम्मते मुहम्मदिया ﷺ का सिर्फ “एक गिरोह” ही शिर्क से महफूज रहेगा।

اللّٰه ﷻ के महबूब की 5 सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाएं।

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “मुझे तुम्हारे मुताल्लिक इस बात का डर नहीं कि तुम (पूरी उम्मत ही) मेरे बाद शिर्क करने लगोगे, अल्बत्ता मुझे डर हे कि तुम एक दूसरे के मुकाबले में दुनिया में रग्बत करोगें।" [صحیح بُخاری "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 1344 ، صحیح مُسلم "کتابُ الفضائل" حدیث نمبر 5976]

नोट: अहले सुन्नत कहलवाने वाले तीनों मसालिक: I बरेल्वी, II देओबंदी, और III सल्फी (अहले हदीस) के मुष्तर्का इमाम इब्ने हजर अस्कलानी رحمہ اللہ (अलमुतवफ्फी 852 हि०) इसी हदीस के तहत लिखते हैं: “इस से मुराद यह है कि उम्मत मज्मूई तौर पर शिर्क में मुब्तला नहीं होगी वरना उम्मते मुस्लिमा में से बाज़ की तरफ से **शिर्क** वाके हुआ है।" [فتحُ الباری : جلد 3 صفحہ 211] बल्कि खुद तीनों मसालिक इस बात पर मुत्तफिक हैं कि मुसलमानों के मशहूर फिर्के "हलुलियाह" और "राफज़ी" 100 % **शिर्क** में मुब्तला हैं। अल्बत्ता पूरी उम्मते मुहम्मदिया ﷺ गुमराह नहीं होगी चुनाँचे:

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “बेशक मेरी उम्मत (मज्मूई तौर पर) गुमराही पर जमा नहीं होगी" [المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399]

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “72 (फिर्के) दोजख में जाएंगे और एक जन्नत में जाएगा।" [سُنن ابی داؤد "کتابُ السُنّۃ" حدیث نمبر 4597]

4 **तर्जुमा सहीह हदीस:** नबी ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "बेशक बनी इस्राईल 72 फिर्कों में तक्सीम हुए और मेरी उम्मत 73 फिर्कों में तक्सीम होगी “एक मिल्लत” के सिवा बाकी सब जहन्नम में होगें।” पूछा गया वह मिल्लत कौन सी है ? आप ने फरमाया: “مَا اَنَا عَلَيْهِ وَ اَصْحَابِیْ” (जिस पर मैं मेरे सहाबा हैं)

[جامع ترمذی "کتاب الایمان" حدیث نمبر 2641]

नोट: नबी ﷺ के ज़माने में वह “एक मिल्लत” सहाबा किराम رضی اللہ عنہم पर मुशतकिमल थी और फिर मुसलसल कयामत तक इसी मनहज पर सिर्फ नबी ﷺ का अपना इमाम मानते हुए “एक गिरोह” हक पर कायम रहेगा:

5 **तर्जुमा सहीह हदीस:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “मेरी उम्मत का "एक गिरोह" हमेशा हक पर रहेगा, वह गालिब ही रहेंगे, और कोई भी मुख़ालफत करने वाला उनको नुक्सान नहीं पहुँचा सकेगा यहाँ तक कि اللّٰه ﷻ का हुक्म (कयामत) आ जाएगा।” [صحیح بُخاری "کتابُ الاعتصام" حدیث نمبر 7312 ، صحیح مُسلم "کتابُ الامارۃ" حدیث نمبر 4955]

आखिरी वसिय्यत:

सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफात से 3 माह पहले हज्जतुल विदा के मौके पर वसिय्यत करते हुए इर्शाद फरमाया:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम मे दो ऐसी अजीम चीज़े छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होगे: I اللّٰه ﷻ की किताब और II उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सहीह अहादीस से माखूज हो) [الموطا لِلما لک "کتابُ القدر" حدیث نمبر 1628، المستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 318]

नोट: اللّٰه ﷻ ने उलमा और दर्वेशों की तालीमात की बजाए अपनी **वहीह(कुरआन और उसकी तफ्सीर यानी यही अहादीस)** की हिफाज़त की जिम्मेदारी खुद ली है:

[سورۃُ الحجر : آیت نمبر 9]

नोट: “इज्माए उम्मत” को हुज्जत मानना दरअसल कुरआन और सहीह अहादीस मानने का हुक्म मानने में ही दाखिल है: [النساء : 115]، [المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399]

अगर कुरआन व सुन्नत और इज्माए उम्मत की मुखालफत ना आए तो जदीद मसाइल के हल के लिये “कयास या इज्तीहाद” करना जायज़ है :

[المُصنف لابن ابی شیبۃ "کتابُ البیوع" حدیث نمبر 22,990]